डाक्युड्रामा लेखन में डाक्युमेंट्री और कथात्मक लेखन के तत्व सम्मिलित होते हैं। डाक्युमेंट्री के तत्व और फीचर फिल्मों तथा धारावाहिक लेखन के तत्व मिलकर डाक्युड्रामा की पटकथा बनाते हैं। डाक्युड्रामा के विषय पर पर्याप्त शोध करने के बाद यह निर्णय लिया जाता है कि कौन से तथ्य ड्रामा के रूप में दिखाये जाएँगे और कौन से दूसरे तथ्य 'डाक्युमेंट्री फारमैट' में रखे जाएँगे। इस प्रकार डाक्युड्रामा की पटकथा दो भागों में बंट जाती है।

**डाक्युड्रामा पटकथा**

- डाक्युमेंट्री अंश
- कथात्मक अंश (पूर्व में घटी घटना की प्रस्तुति)

डाक्युमेंट्री अंशों के लेखन के प्रति वही प्रक्रिया अपनाई जाती है जिसका उल्लेख पिछले अध्याय में किया गया है।

कथात्मक अंशों की पटकथा लिखने के लिए लोकेशन और टाइम के अनुसार दृश्य बनाए जाते हैं। दृश्यों की कथावस्तु के अनुसार पात्रों की भूमिका और उनके संवाद लिखे जाते हैं। दोनों अंशों के मिश्रण से 'डाक्युड्रामा' की पटकथा बनती हैं।

कथात्मक अंश का उद्देश्य चूंकि वास्तविक घटना की पुनरावृति होता है इसलिए पात्रों तथा संवादों का तथ्यपरक होना अनिवार्य है। इन अंशों में कल्पना का समावेश तथ्यों के आधार पर ही किया जाता है। लेखक और निर्देशक भरपूर प्रयास करता है कि पात्र, संवाद और घटनाओं की प्रस्तुति वास्तविक घटना जैसी ही हो।

डाक्युड्रामा और डाक्युमेंट्री की समानताओं और अंतर को समझने के लिए नीचे लिखे तालिका पर ध्यान दें।

**डाक्युमेंट्री और डाक्युड्रामा में समानता और अंतर**

| स्वरूपगत विवरण | डाक्युमेंट्री | डाक्युड्रामा |
|---|---|---|
| यथार्थ पर आधारित | ✓ | ✓ |
| भुक्त भोगी का साक्षात्कार | ✓ | × |
| दस्तावेजी प्रमाण | ✓ | ✓ |
| आँकड़ों द्वारा स्थापना | ✓ | ✓ |
| वायस ओवर | ✓ | ✓ |



Scanned with CamScanner